कामधेनु किसान मितान

छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा , दुर्ग

अंक–2 | वेबसाइड : www.kvkdurgcg.org | वर्ष–2

जुलाई से सितम्बर 2015

संरक्षक

प्रो. उमेश कुमार मिश्र
माननीय कुलपति
छ.ग. कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग

प्रेरणा स्त्रोत

डॉ. अनुपम मिश्रा
निदेशक (अटारी) जोन–7
(भा.कृ.अनु.परि.) जबलपुर

मार्ग दर्शक

डॉ. पी. एल. चौधरी
निदेशक विस्तार
छ.ग. कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग

प्रधान संपादक
डॉ. डी. भोसले
कार्यक्रम समन्वयक कृ.वि.के. अंजोरा, दुर्ग

संपादक
डॉ. एस.के. थापक
विषय वस्तु विशेषज्ञ कृ.वि.के. अंजोरा, दुर्ग

सह संपादक
श्री यू.के. पटेल
श्री रोशन साहू
डॉ. आर. के. गड़पाइले
डॉ. अमित गुप्ता

कृषि विज्ञान केन्द्र, दुर्ग में पंचगव्य आधारित जैविक कृषि पर कृषक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा दुर्ग में दिनांक 13 एवं 14 जुलाई 2015 को पंचगव्य आधारित जैविक कृषि पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें दुर्ग जिले के विभिन्न विकासखंडों (दुर्ग, धमधा, पाटन) के लगभग 80 कृषकों ने कृषक प्रशिक्षण का लाभ उठाया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. पी.एल. चौधरी, निदेशक कामधेनु पंचगव्य अनुसंधान संस्थान एवं विस्तार केन्द्र, दुर्ग ने पंचगव्य की महत्ता पर चर्चा की। कृषि विज्ञान केन्द्र, दुर्ग कार्यक्रम समन्वयक डॉ. धीरेन्द्र भोसलें ने पंचगव्य आधारित जैविक कृषि का महत्व पर विस्तार से चर्चा की। कामधेनु पंचगव्य अनुसंधान संस्थान एवं विस्तार केन्द्र, दुर्ग के सहायक प्राध्यापक डॉ. क्रांति शर्मा, डॉ. राकेश मिश्रा एवं श्री यशवंत अटभैय्या ने केंचुऑ खाद बनाने की विधि, पंचगव्य जैविक खाद एवं कीट नियंत्रक निर्माण तथा आयुर्वेद में पंचगव्य की महत्ता पर कृषकों को महत्वपूर्ण जानकारी दी। कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा, दुर्ग के वैज्ञानिक डॉ. एस.के. थापक, श्री उमेश कुमार पटेल, श्री रोशन लाल साहू ने फसलों में बीमारियों की जैविक रोकथाम, जैविक खाद बनाने की विधि एवं उद्यानिकी फसलों में जैविक कृषि पर चर्चा की।

राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर द्वारा चूहा एवं खरपतवार प्रबंधन विषय पर कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा

कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा दुर्ग में दिनांक 26 सितम्बर 2015 को चूहा एवं खरपवार प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय कृषक–वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छ.ग. कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग के निदेशक विस्तार डॉ. पी.एल. चौधरी ने जैविक कीट नियंत्रण की विधियों पर प्रकाश डाला। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के वैज्ञानिक तथा राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर के वैज्ञानिको द्वारा चूहा एवं खरपतवार प्रबंधन विषय पर विस्तार से कृषकों से चर्चा की। इस कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा में कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक एवं विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक उपस्थित रहें।

विगत तीन माह की गतिविधियां एवं प्रस्तावित गतिविधियां

प्रक्षेत्र परीक्षण कार्यक्रम

क्र.	शीर्षक	क्षेत्रफल (हे.)	लाभान्वित कृषक
1	टमाटर में रोग रोधी किस्म अर्का रक्षक के प्रभाव का आंकलन	1.6	06
2	लौकी की उत्पादकता बढ़ाने हेतु बोरान के पर्णीम छिड़काव के प्रभाव का आंकलन	1.6	06
3	सोयाबीन फसल में सल्फर पोषक तत्व का आंकलन	0.8	04
4	धान फसल में मृदा परीक्षण आधार पर उर्वरक प्रयोग का आंकलन	0.8	04
5	धान के शीथगलन रोग प्रबंधन हेतु जैवनाशकों एवं पंचगव्य का आंकलन	1.6	04
6	धान में तना छेदक प्रबंधन हेतु जैविक कीटनाशकों का आंकलन	1.6	04
7	मक्का हरा चारा उत्पादक का आंकल	1.6	04
	कुल	9.6	32

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	शीर्षक	क्षेत्रफल (हे.)	लाभान्वित कृषक
1	बैगन में तना एवं फल छेदक कीट नियंत्रण हेतु लारविन (कीटनाशक) का प्रभाव	4.8	10
2	धान फसल में समन्वित पोषण प्रबंधन का प्रदर्शन	4.8	12
3	धान के प्रमुख फफूंद जनित रोग प्रबंधन हेतु फफूंद नाशकों का आंकलन	4.8	12
4	मक्का हरा चारा उत्पादन प्रबंधन	4.8	12
	कुल	19.2	46

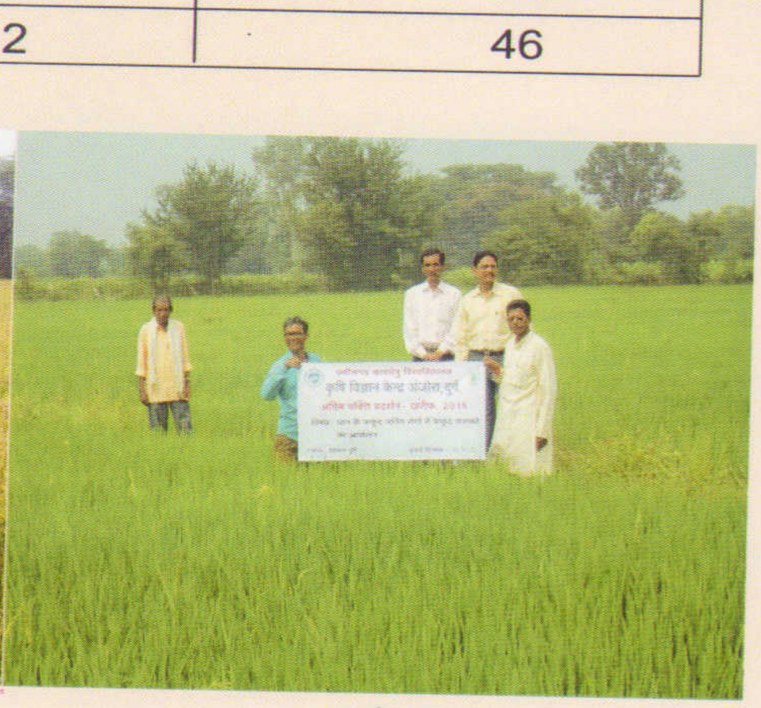

कृषकों एवं ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
06	05	187	09	07	280

ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
05	09	407	04	03	137

सेवारत विस्तार कर्मियों हेतु प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
03	03	74	03	03	90

प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
01	01	50	01	01	50

विस्तार गतिविधियाँ

क्र.	विषय	विगत तीन माह	आगामी तीन माह
1	मासिक कार्यशाला	03	03
2	वैज्ञानिकों का प्रक्षेत्र भ्रमण	10	15
3	कृषकों द्वार कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण	259	300
4	प्रसार पत्रिका / लेख	50	50
5	कृषक गोष्ठी/संगोष्ठी	03	03
	कुल	325	371

सब्जी उत्पादन व गुणवत्ता बढ़ाने में वृद्धि नियामकों का प्रयोग

फसल	वृद्धि नियामक	प्रयोग की जाने वाली मात्रा
माटर, मिर्च, गन, मटर	एन.ए.ए. (4.5प्रतिशत) 450 पी.पी.एम.	100 मि.ली./450 लीटर पानी में घोलकर, 2.5 मि.ली./10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
भण्डी	साईकोसेल	1 मि.ली./ली.पानी बीज को बुवाई से पहले 24 घंटे डुबोकर रखें
याज	मैलिक हाइड्राजाइड (एम.एच.)	2.5 ग्रा./ली.पानी कंद खुदाई से 15 दिन पूर्व
ौकी	एम.एच. 50 पी.पी.एम.	1 ग्राम एम.एच की मात्रा को 20 लीटर पानी में घोल कर स्प्रें करें।
	इथ्रेल का 100 पी.पी.एम.	4 मि.ली. 50: वाली इथ्रेन की मात्रा को 20 लीटर पानी में घोल कर स्प्रें करें।
ोरई	इथ्रेल का 100 पी.पी.एम.	4 मि.ली. 50: वाली 20 लीटर पानी में घोल कर स्प्रें करें।
	मैलिक हाइड्राजाइड (250 पीपीएम)	5 ग्राम को प्रति 20 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
द्दू	इथ्रेल का 250 पी.पी.एम.	10 मि.ली. 50: वाली 20 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
रेला	साइकोसिल 250 पी.पी.एम.	5 ग्राम को प्रति 20 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
	मैलिक हाइड्राजाइड (50–250 पीपीएम)	1 से 5 ग्राम दवा का 20 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
ीरा	इथ्रेल का 100 पी.पी.एम.	4 मि.ली. 50: वाली 20 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
	साइकोसिल 50 पी.पी.एम.	1 ग्राम दवा का 20 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

ने में समन्वित रोग–कीट प्रबंधन

क्रं.	रोग–कीट का नाम	प्रबंधन
1.	कालररॉट	3 से 4 वर्ष का फसल चक्र अपनायें ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई रोग सहनशील किस्मों (जे.जी.–11, जे.जी.–14, जैकी) का चयन 10 कि.ग्रा. बीज/एकड़ अतिरिक्त उपयोग करें
2	फली बेधक /कटुआ कीट	समय से बुवाई खेत में 04 से 06 खूटी/एकड़ फूल आने से पूर्व लगायें खड़ी फसल में एन.पी.वी. 250 एल.ई. या बेसिलेस थूर्रेजियन्सीस 1 कि.ग्रा./हेक्टेयर तथा टिनोपाल 0.1 प्रतिशत व गुड़ 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए। नीम तेल या करंज तेल 10 से 15 मि.ली. +1 मि.ली. टिनोपाल को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। म्बेसिडिन 0.2 प्रतिशत या अचूक 0.05 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

सम - सामयिक सलाह

जुलाई

- बैगन, टमाटर की रोपाई हेतु खेत तैयार करते समय 150 कि.ग्रा. अमोनियम सल्फेट, 500 कि.ग्रा. सुपर फास्फेट तथा 125 कि.ग्रा. पोटाश वाली खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाना तथा 60×45 या 60×60 सेमी. पर रोपाई करके तुरंत मिट्टी में पानी देना चाहियें।
- लौकी में बीटल से बचाव के लिए 10 कि.ग्रा. फोलीडाल धूल का फसलों पर बुरकाव करें।
- आम, आवंला, अमरूद, चीकू, कटहल, नींबू आदि वृक्षों में खाद उर्वरक देने का कार्य पूर्ण करें।
- केलें की पौधे की रोपाई का कार्य आरंभ करें। पुराने केले की पौधे के बगल से निकलने वाले सकर को काट दें।
- सब्जियों एवं मौसमी फूलों की पौधशाला हेतु क्यारी निर्माण भूमि उपचार एवं क्यारी में बीजों की बुवाई करें।
- आम के विभिन्न उत्पाद जैसे नेक्टर, आर.टी.एस., अचार, चटनी आदि तैयार करें।
- अधिकांश प्रवर्धन कार्य जैसे– उपरोकन, कलिकायन, भेटकमल, तथा शीर्ष कार्य इसी माह किये जाते है।
- सब्जियों में पर्णदाग रोग दिखने पर ताम्रयुक्त दवा (3 ग्राम) या क्लोरोथेलोनिल (2 ग्राम) दवा को प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़ाव करें।
- धान के थराह को रोपाई पूर्व क्लोरोपाइरीफॉस नामक दवा की 2 मि. ली. मात्रा/लीटर पानी के हिसाब से उपचारित करें।
- धान, सोयाबीन में कीट व्याधि के लक्षण दिखने पर साफसुपर नामक दवा की 2 ग्राम मात्रा तथा क्लोरोपाइरीफॉस की 2 मि.ली. मात्रा/लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।
- मक्का की फसल में पत्ती धब्बा रोग आने की दशा में हेक्जाकोनाजोल नामक दवा की 1 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सब्जी वाली फसलो की बुवाई पूर्व फफूंदनाशक दवा कार्बेडाजिम या डायथेन एम–45 इत्यादि में से कोई भी एक दवा से बीजोपचार अवश्य करें।
- टमाटर, बैगन, मिर्च इत्यादि में गलन रोग की समस्या होने पर फसल मे ब्लाईटाक्स–50 या फाईटोलान नामक दवा की 3 ग्राम मात्रा/लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर 2–3 छिड़काव करें।

अगस्त

- धान के खेत में लगातार पानी भरकर न रखें।
- हरी काई का प्रकोप दिखे तो कॉपर सल्फेट (नीला थोथा) को पोटली में बांधकर रखें।
- यदि धान की रोपाई इस माह करनी पड़ रही है तो पौधे की दूरी कम रखें व दो से तीन पौधो का उपयोग करे।
- रोपा लगाने पूर्व धान के थरहा की जड़ो को क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 ई. सी. दवा का 1 मि.ली./लीटर पानी तथा 2 किलो यूरिया मिलाकर 3–4 घटें डुबोकर रोपा लगाएँ।
- गन्ना फसल पर पायरिल्ला कीट के प्रकोप होने पर मिथाइल डेमेटोन 25 ई.सी. दवा का 700 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- आम एवं बेर में उपरोपण, कलिकायन तथा शीर्ष कार्य करें साथ ही साथ अमरूद, नीबू एवं अन्य वृक्षों में गूटी बांधे।
- शीतकालीन सब्जियों विशेषकर अगेती गोभीवर्गीय सब्जियों की बीज बोने की तैयारी करें।
- गुलाब में सामान्य काट–छॉट कर बोर्डो पेस्ट का प्रयोग करें।
- सब्जियो में पर्णदाग रोग दिखने पर ताम्रयुक्त दवा (3 ग्राम) या क्लोरोथेलोनील (2 ग्राम) दवा को प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- पशुशालाओं के आसपास वृक्षारोपण करें साथ ही साथ पशु आहार में फफूंद की रोकथाम करें।
- मादा पशुओं के गर्भाधान पर विशेष ध्यान दें।
- बकरियों के लिये बबूल की फल्लियॉ तोड़कर संग्रहित करें।

सितम्बर

- धान में किस्म के अनुसार गभोट अवस्था (पोटरियाने की अवस्था) में यूरिया का शेष मात्रा कतार में डालें।
- मक्कें की संकर किस्मों में 25 से 30 किलोग्राम नत्रजन नर मंजरी बनते समय प्रयोग करें।
- पिछलें माह डाली गई सब्जी नर्सरी की रोपाई करें।
- गोभी में अंगेती फसल में निंदाई गुड़ाई कर नत्रजन 4 कि.ग्रा. प्रति हेक्टे. डालें।
- गर्भवती भैंसो को पौष्टिक दलहनी चारे के अलावा, खनिज लवन व विटामिन युक्त आहार दें।
- भेड़–बकरियों को नमी युक्त फर्श पर न रखा जावें।
- मुर्गियों के लिए संतुलित आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- अरहर की फसल में पत्ती लपेटक अधिक होने की अवस्था में इन्डाक्साकार्व का 5 मिली/10 ली. की दर से छिड़काव करना चाहिए।
- ग्रासी खरपतवार के नियंत्रण हेतु 1 ली0 क्वीजालफास इथाइल का 500 ली0 पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें।
- पत्ती खाने वाले कीड़ों के प्रबंधन के लिए रायनेक्सीपाय (क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल) 100 मि.ली./हेक्टे. अथ क्वीनालफॉस 1.5 ली./हेक्टे. अथवा इण्डोक्साकार्ब 5 मि.ली./हेक्टे. की दर से 500 लीटर पानी में मिलाक छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी द्वारा फैलायां जाने वाला पीला मोजाइक रो ग्रसित पौधों को खेत से बाहर निकालकर गाड़ दें। सफे मक्खियों की रोकथाम के लिए इमीडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल. का 600 मि.ली./हैक्टे. की दर से छिड़काव करें।
- सोयाबीन की जिन प्रजातियों पर पॉ ब्लाइट/एन्थ्रेकनोज/लीफ स्पॉट आदि का प्रकोप हो त बिनोमिल 1 ग्रा./लीटर या थायोफिनेट मिथाइल 2 ग्र /लीटर की दर से 500 लीटर पानी में छिड़काव करें।
- जिन क्षेत्रों में सोयाबीन की फलियों में दाना भरने व स्थिति हो एवं सूखे की अवस्था हो वहां पर सिंचाई अवश्य करें।
- सोयाबीन उत्पाद को बीज के रूप में उपयोग लाना है त सोयाबीन की गहाई के लिए थ्रेशर में ड्रम स्पीड 350–40 आर.पी.एम. पर ही गहाई करें जिससे कि बीज की अंकुर क्षमता पर विपरीत प्रभाव ना पड़े।

बुक पोस्ट

प्रेषक :
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग
दूरभाष क्रमांक 0788– 2623461,

कामधेनु किसान मितान की सदस्यता शुल्क 30/रू.
वार्षिक कार्यालय में जमा करें

सेवा में,
श्री/श्रीमती/डॉ. .....
.....
.....